देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115

October 2023

Vol.-18, Issue-4

Impact Factor
7.523

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

Disclaimer :

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

18.	अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानियों में राजनैतिक संघर्ष	डॉ. आलपाटि भानु प्रसाद 104-1
19.	संजीव के उपन्यास 'रह गई दिशाएं इसी पार' और 'अहेर' में व्यक्त समाज, सत्ता और पूँजी का अन्तर्सम्बन्ध	डॉ० राजेश राव 108-1
20.	गोविन्द मिश्र के कथा साहित्य में नारी का स्वरूप	षेक रहीमा 115-1;
21.	काव्य का श्रृंगार – अलंकार	डॉ. रूमा साह 121-1;
22.	सामाजिक संचेतना के कथाकार हरपाल सिंह अरूष	शुभ दर्शिनी राउत 125-1;
23.	दलित चिंतन की परम्परा प्राचीन काल से भक्तिकाल तक	प्रदीप कुमार सागर, प्रोफेसर मीरा कश्यप 130-13
24.	भारत में संविधानिक नागरिक संहिता की आवश्यकता – समानता और न्याय की ओर एक कदम	Dr. Nikita Sharma 136-14
25.	The effects of social and emotional learning on student well-being	Anshumalika 144-14
26.	भारत में जाति-आधारित राजनीति : लोकतंत्र और शासन पर प्रभाव	Dr. Nikita Sharma 147-15
27.	आखिरी दशक का सामाजिक परिवेश की विवेचना	Dr. Sajitha. J. 155-15
28.	हिंदी हाइकु कविता में वात्सल्य बोध – 'जागो बिटिया' के विशेष संदर्भ में	सजना वी ए 159-16
29.	शिवानी के. 'सुरंगमा' और 'रमशान चंपा' : उपन्यासों में चित्रित ग्रामीण संस्कृति	Dr. K.Mary Nirmala Arokiam 163-16
30.	भारतीय वनों की समस्या और समाधान	डॉ. वेदप्रकाश 169-17
31.	गरीबदास के समाज सुधार : हरियाणा के संदर्भ में	रूचि वत्स, डॉ0 रेखा रानी 175-17

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
October 2023

ISSN : 2395-7115
Page No. : 121-124

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

काव्य का श्रृंगार – अलंकार

डॉ. रूमा साह

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, स.भ.सि. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रूद्रपुर, उधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड।

अलकार काव्य का आवश्यक उपादान है। काव्य की शोभा में वृद्धि करने हेतु इसी उपादान का प्रयोग किया जाता है। अलंकार अर्थात् जो अलंकृत करें, काव्य की शोभा में वृद्धि करे। जिस प्रकार नारी आभूषणों के अभाव में सौन्दर्य विहीन है उसी प्रकार अलंकारों के बिना काव्य की शोभा में वृद्धि हो ही नहीं सकती है। "अलंकारों का उदय प्रायः वाङ्मय के साथ ही हुआ क्योंकि संस्कृत वाङ्मय के प्रथम ग्रन्थ ऋग्वेद की ऋचाओं में अलंकारो का प्रयोग प्राप्त होता है।" (1)

जो आभूषित करता है अर्थात् काव्य या नारी सौन्दर्य को सुसज्जित करे या जिनके द्वारा ये आकर्षक बने, दोनो ही प्रकार से तात्पर्य अलंकार से ही है। अलंकारों को काव्य का एक आवश्यक अंग माना गया है। जब तक कि काव्य में विभिन्न अलंकारों का प्रयोग नहीं होता, तब तक उसकी कोई महत्ता नहीं होती। " अलंकार शब्द अलम् पूर्वक कृधातु से निष्पन्न हुआ है। इसकी व्युत्पत्ति दो प्रकार से की जाती है। प्रथम अलंकरोतीति अलंकार– अर्थात् जो आभूषित करता है, वह अलंकार है। द्वितीय अलंक्रियते नेनेव्यअंकार– अर्थात् जिसके द्वारा कोई पदार्थ आभूषित हो उसे अलंकार कहते है," (2) यह भावाभिव्यक्ति का विशेष माध्यम है। काव्य में जो आकर्षण शक्ति होती है। वो इसी से प्राप्त होती है।

वामन अलंकार को सौन्दर्य का पर्यायवाची मानते है। "सौन्दर्यमलंकार।" (3) काव्य में उपमा, अनुपास, रूपक, उत्प्रेक्षा, भ्रान्तिमान, संदेह, मानवीकरण, अतिश्योक्ति, यमक, श्लेप, विरोधाभास, उल्लेख, विभावना, स्मरण, पुनरूक्ताभास आदि अलंकारो का प्रयोग कहीं न कहीं दृष्टिगोचर होता है। संक्षेप में उक्त अलंकारों का वर्णन प्रस्तुत है।

1– अनुप्रास अलंकार :– काव्य में एक या अनेक समान वर्णों का प्रयोग एक से अधिक बार होने पर अनुप्रास अलकार की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। जैसे:–

" केकी–कीर, कपोल, कोकिला, चातक करने शब्द समोद।" (4)

x x x

"आग आगे, आग पीछे
आग ऊपर, आग नीचें।।" (5)

उपर्युक्त पक्तियों में क तथा अ वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार होने पर अनुप्रास अलंकार है।

2– उपमा अलंकार :– समान गुणाधार पर जिस स्थान पर किसी एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से कर दी जाए उपमा अलकार होता है। कतिपय उदाहरण प्रस्तुत है :–

" मुख था पूरब और नयन थे बन्द कमल से,
हुए प्रफुल्लित रवि किरणों के स्पर्श अमल से।" (6)

x x x

"विह्वल शबरी यमुना सी थी
ऋषि के उज्जवल पद–पद्मों पर।" (7)

उपर्युक्त उदाहरणों में नयन की उपमा बन्द कमल से, शबरी की उपमा यमुना जी से की गयी है।

3–रूपक अलंकार– प्रस्तुत अलंकार में उपमेय तथा उपमान में समानता होने के कारण एक वस्तु को दूसरी वस्तु के रूप बताया जाता है। उदाहरणत –

" माना मतंग थे ऋषिवर
ज्ञानी औ, परम तपस्वी,
पर उनके यश–दिनकर पर
छायी थी शबरी–बदली।" (8)

प्रस्तुत कविताश में ऋषि मतंग के यश रूपी सूर्य पर निम्न वर्णा शबरी बदली रूप में छायी थी।

"पिंजर बद्ध किये रहे है।
मन–कोकिल को मानव।" (9)

उक्त पंक्तियों में कवि मन रूपी कोयल को शरीर के पिंजरे में कैद घोषित करता सत्यता का उद्‌घाटन कर रहा है।

4–उत्प्रेक्षा अलंकार– सादृश्यता के कारण उपमेय में उपमान के आरोप की समानता उत्प्रेक्षा अलंकार को जन्म देती है। ज्यों, मनों मानों मनु, जनु, जानहुँ, मानहुँ आदि इसके उदाहरण है।

यमुना जल में स्नान करती राधिका कहती है। कि मानों मेरे चहुँ ओर यमुना का श्यामल जल नहीं अपितु आपका (कृष्ण) जी का साँवला शरीर है।

"मानो यह यमुना की साँवली गहराई नहीं है
यह तुम हो जो सारे आवरण दूर कर
पोर–पोर कसे हुए हो।"(10)

इसके अतिरिक्त अन्य उदाहरण प्रस्तुत है–

"तड़प रही थी मीन–सदृश वह, ज्यों पड़े, सुख जल के बाहर" (11) द्रोपदी दुःख में इस प्रकार तड़प रही है जिस प्रकार मीन जल से बाहर निकाले जाने पर तड़पती है।

5–भ्रान्तिमान अलंकार– जिन स्थानों पर रंग, रूप–वर्ण आदि की समानता के कारण किसी वस्तु को भ्रमवश अन्य वस्तु समझ लिया जाता है, उसे भ्रान्तिमान अलंकार कहा जाता है। उदाहरण के तौर पर इन्द्र के राजभवन में दुर्योधन को जल के स्थान पर थल तथा थल के स्थान पर जल की भ्रान्ति हो जाती है।

"रत्न और मणियों से शोभित, रचनाएँ थी अदभुत गूढ़।
जल में थल का, थल में जल में का, भ्रम हो, दर्शक बनता मूढ़।। (12)

6–संदेह अलंकार– जहाँ पर अन्त तक किसी वस्तु या व्यक्ति के होने न होने का संदेह बना रहता है। संदेह अलंकार है।

" कह रहे है कौन ये–"जल दो मुझे"
ग्राहय होगा जल इन्हें इस हाथ का।।" (13)

उपर्युक्त उदाहरण में सामरी को अपने हाथ का जल अन्य के द्वारा माँगे जाने पर उस व्यक्ति के साधारण असाधारण होने का संदेह होता है।

7–श्लेष अलंकार– एक शब्द के अन्तर्गत दो या दो से अधिक अर्थों का समावेश श्लेप अलंकार कहलाता है।

"है याज्ञसेनी द्रोपदी
बन्धु कृष्णा के कृष्णमुरारी।" (14)

याज्ञसेनी व कृष्णा में दो–दो अर्थ छिपे है। याज्ञसेनी का तात्पर्य द्रोपदी व यज्ञकुण्ड से उत्पन्न होने वाली द्रोपदी से व कृष्णा का तात्पर्य श्रीकृष्ण जी की बहन द्रोपदी से है।

8–पुनरूक्ताभास अलंकार– जहाँ पर एक शब्द की आवृत्ति बार–बार हो तथा हर बार उसका अर्थ समान हो वहाँ पर पुनरूक्ताभास अलंकार होता है।

"कल्पना केलि–पट खोल–खोल
मन ही मन से बोल–बोल। (15)

अन्य

" शत शत शर संग संग चले, तड़िद्धार–अनुमान
निज कौशल के पार्थ ने शत–शत दिये प्रमाण"। (16)

खोल, बोल, शत, संग, इत्यादि शब्दो की आवृत्ति एकाधिक बार होने के कारण पुनरूक्तामास अलंकार है।

9–स्मरण अलंकार– जहाँ सादृश्य वस्तु को देखकर या उसकी अनुभूति द्वारा पहले देखी या अनुभव की गयी वस्तु का स्मरण हो जाता है। उसे स्मरण अलंकार कहते है।

आम्र वृक्ष को देखकर राधिका को श्रीकृष्ण जी के साथ व्यतीत किये मनोरम, सुखद क्षणों का स्मरण हो जाता है।

"उस तन्मयता में
तुम्होरे वक्ष में मुँह छिपा कर
लजाते हुए
मैंने जो जो कहा था
पता नही उसमें कुछ अर्थ था भी या नहीं।। (17)

निम्न पक्यिों में कुन्ती द्वारा बारम्बार कर्ण को अपना पुत्र कहे जाने पर उसे बाल्यावस्था के उन दिनों का स्मरण हो आता है। जबकि कुन्ती द्वारा त्यागे जाने पर माँ राधा ने उसका पालन किया।

"उमड़ी न स्नेह की उज्जवल धार हृदय से।
तुम सूख गई मुझको पाते ही भय से।
पर राधा ने जिस दिन मुझको पाया था
कहते है। उसको दूध उतर आया था।" (18)

10–विभावना अलंकार– जिस स्थान पर कारण के अभाव में ही कार्य सम्पन्न हो जाए वहाँ पर विभावना अलंकार होता है। बहुत ही खूबसूरत उदाहरण दृप्टव्य है–

"लगा कि भोजन छक कर पाये, सबको आने लगी डकार
लगे परस्पर वे कहने यह, बनवाया भाजन बेकार।।" (19)

उपर्युक्त उदाहरण में श्रीकृष्ण जी की अपार कृपा के फलस्वरूप दुर्वासा ऋपि तथा उनके शिप्यों का पेट बिना भोजन किये ही भर जाने अर्थात् कारण के बिना कार्य सम्पन्न होने से विभावना अलंकार है।

11–अतिश्योक्ति अलंकार– जब किसी भी वस्तु या विपय का बढ़ा–चढ़ा कर वर्णन किया जाता है। तो उसे अतिश्योक्ति अलंकार कहते है। जैसे–

" बाण उस आपाढ़ के प्रासाद पर
बदलों को छू रहे थे हाथ से।" (20)

12–उल्लेख अलंकार– किसी एक वस्तु विशेप का विभिन्न रूपेण वर्णन उल्लेख अलंकार कहलाता है। संशय की एक रात में जल का विविध रूपों में वर्णन कवि कुछ इस प्रकार करता है–

" जहाँ हम
देखते

...भी जल है।
...जल
...के भी पार
...ही जल
...की आ रही ध्वनियाँ।। (21)

...काव्यशास्त्र की दृष्टि से भी अलकार शब्दार्थ की शोभा करता है। वह सहृदय के चित्त को आहलादित करने में ... है, अत ये सौन्दर्य का पर्याय है। आचार्य भामह, दण्डी,वामन, कुन्तक, आदि सभी ने चाहे कोई भी क्षेत्र क्यों न हो ...कारों की गहिमा को शिरोधार्य किया है।

संदर्भ

1. पं0 श्री जगन्नाथ विरचित रसंगगाधर, पं0 भुवनमोहन झा, पृ0 56
2. भारतीय काव्य शास्त्र, डा0 रामानन्द शर्मा, पृ0 61
3. काव्यालकार सूत्र, वामन 1/1/2
4. द्रोपदी, श्री बैजनाथ प्रसाद शुक्ल भव्य, पृ0 115
5. शम्बूक, जगदीश गुप्त, पृ0 33
6. कर्ण–कुन्ती, डा0 केदारनाथ जगता, पृ0 19
7. शबरी, नरेश मेहता, पृ033
8. `शबरी, नरेश मेहता, पृ058
9. पृथिवी पुत्र, डा0 विलास डबराल विलास, पृ020
10. कनुप्रिया, धर्मवीर भारती, पृ0 24
11. द्रोपदी बैजनाथ प्रसाद शुक्ल, पृ0 37
12. कर्ण, बैजनाथ प्रसाद शुक्ल भव्य पृ0 25
13. अमृतपुत्र, श्री सियारामशरण गुप्ता, पृ0 25
14. शम्बूक, जगदीश गुप्त, पृ0 33
15. वाणाम्बरी, पोद्दार रामावतार अरूण, पृ0 42
16. कर्ण, श्री बैजनाथ प्रसाद शुक्ल, पृ0 54
17. कनुप्रिया, धर्मवीर भारती, पृ0 65
18. रश्मिरथी, श्री राम्धारी सिंह दिनकर पृ0 85
19. द्रोपदी श्री बैजनाथ प्रसाद शुक्ल भव्य, पृ0152
20. बाणाम्बरी, पोद्दार रामावतार अरूण, पृ0 228
21. संशय की एक रात, श्री नरेश मेहता पृ0 5